ISSN 2456–4753

# प्लूटो

अंक 2 वर्ष 2 जून-जुलाई, 2017

हमने नोंच उड़ाए हैं
तकिए के जो रोएँ हैं
थोड़ा खेले थक गए हैं
बाकी दिन भर सोए हैं।

वरुण ग्रोवर

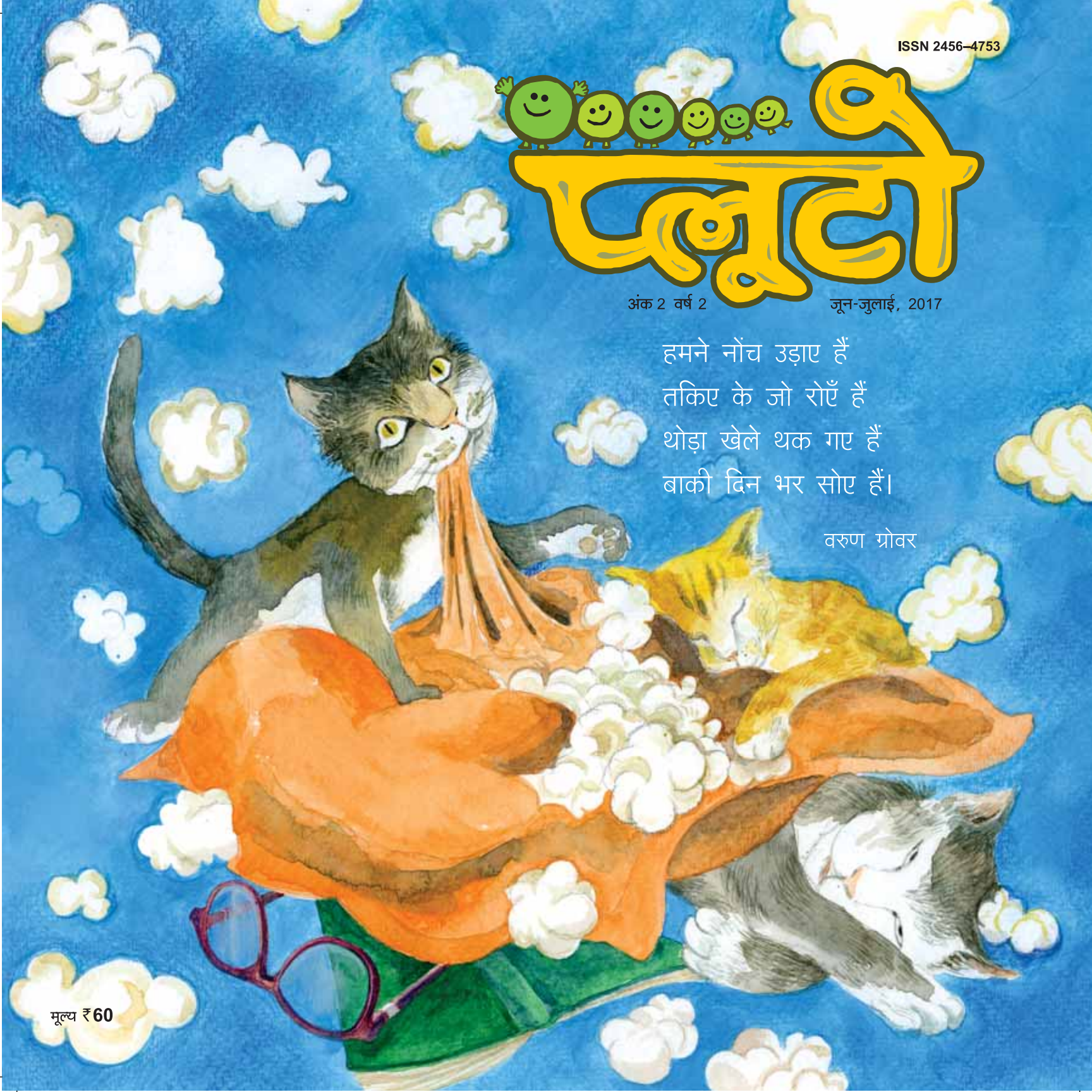

मूल्य ₹60

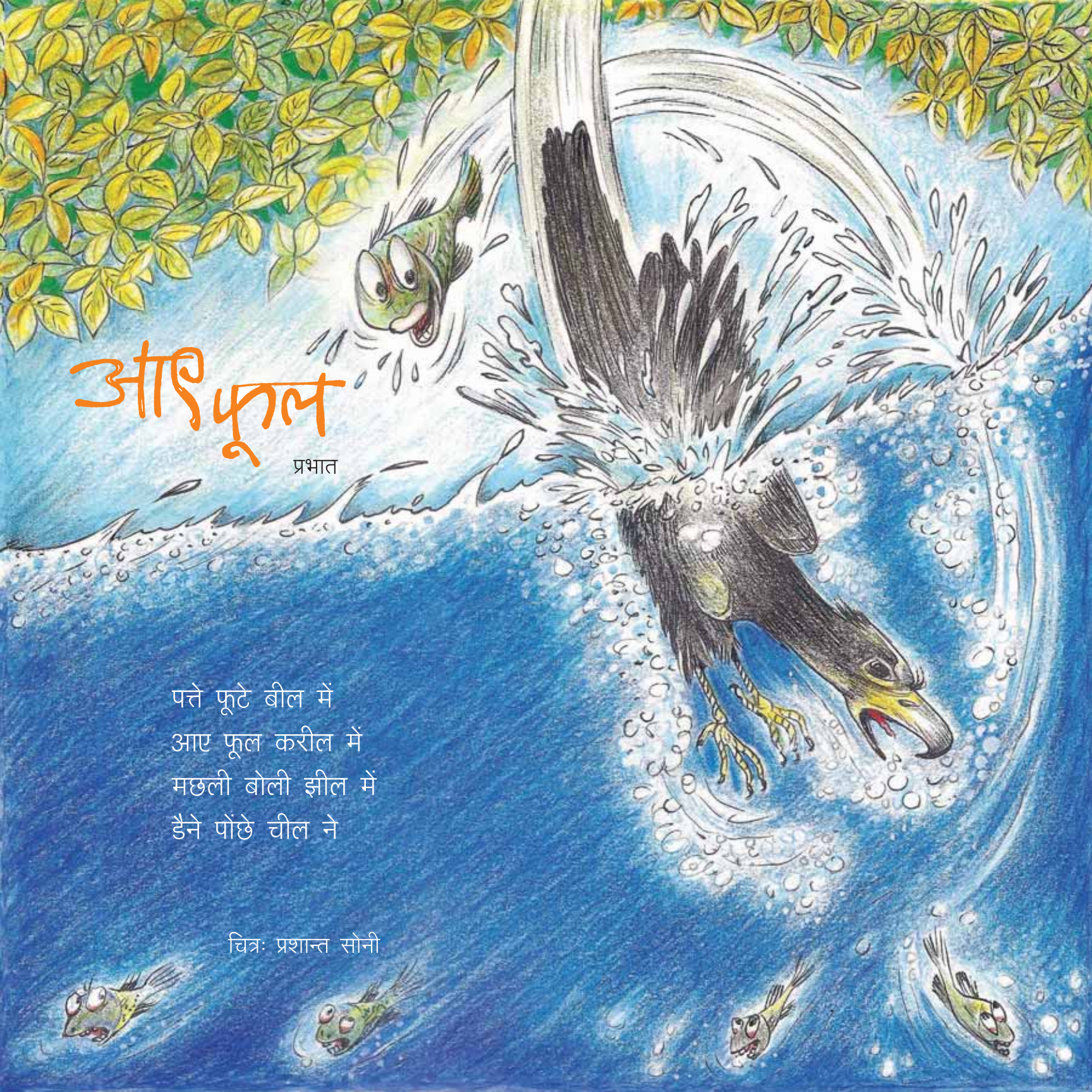

# आए फूल

प्रभात

पत्ते फूटे बील में
आए फूल करील में
मछली बोली झील में
डैने पोंछे चील ने

चित्रः प्रशान्त सोनी

# जाओ वहाँ

अनवारे इस्लाम

जाओ वहाँ
आखिर कहाँ?
जाने न पाए
कोई जहाँ।

लाओ उसे
आखिर किसे?
लाने न पाए
कोई जिसे

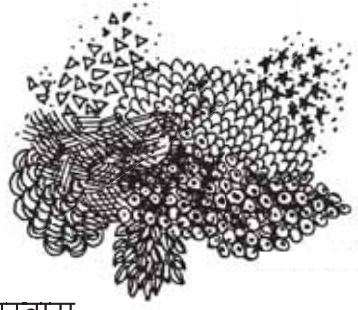

चित्रः सोनाली बिस्वास

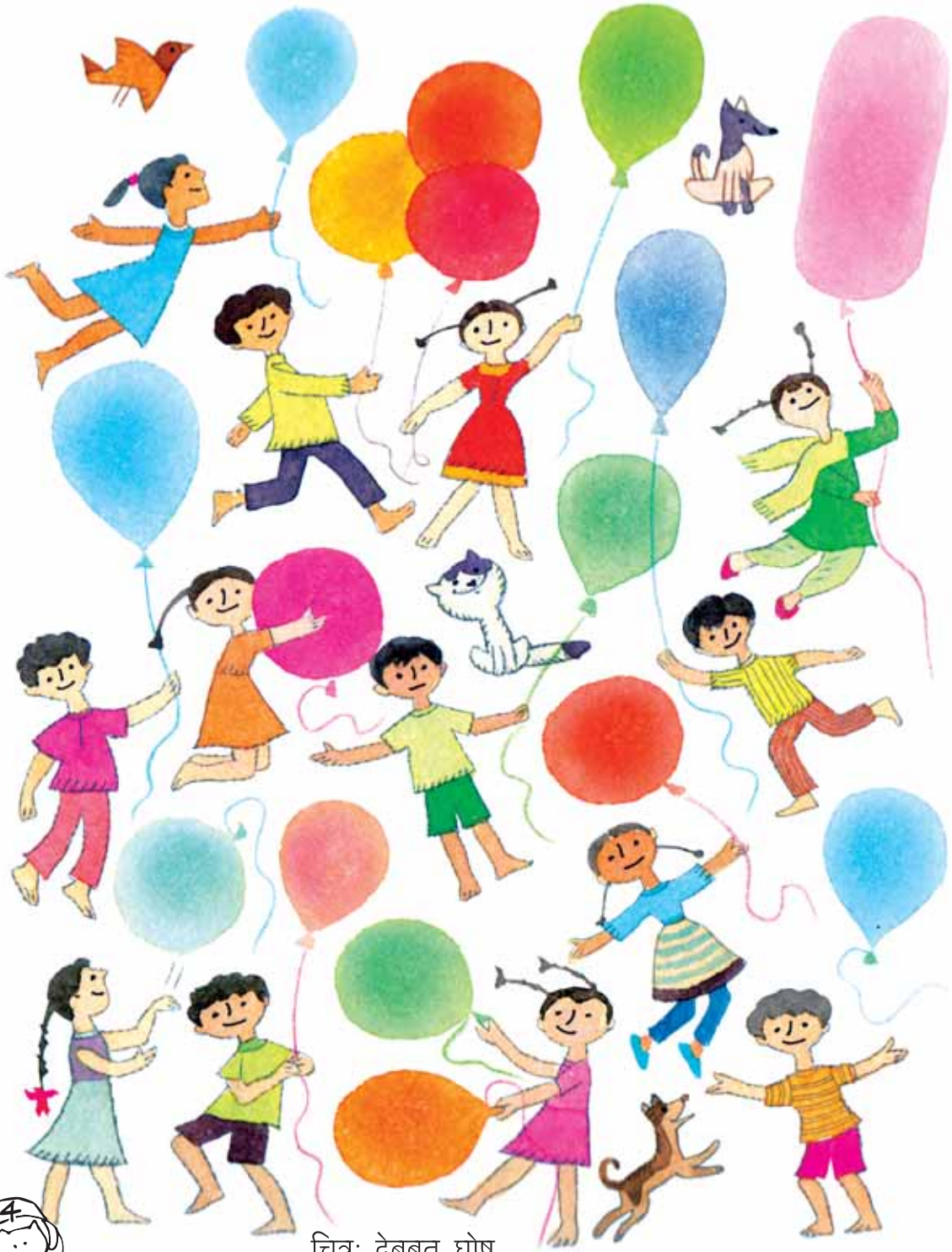

चित्रः देबब्रत घोष

# फुग्गा

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

फुग्गों का लेके एक ढेर
देखो आया है शमशेर

हरे बैगनी लाल सफेद
रंगों के कितने हैं भेद

कोई लम्बा कोई गोल
लाओ पैसा ले लो मोल

मुट्ठी में लो इनकी डोर
इन्हें घुमाओ चारों ओर

हाथों से दो इन्हें उछाल
लेकिन छूना खूब सम्भाल

पड़ा किसी के ऊपर ज़ोर
एक ज़ोर का होगा शोर

गुब्बारा फट जाएगा
खेल खतम हो जाएगा।

# हाथी और चींटी

प्रमोद पाठक

हाथी चिंघाड़ा
जंगल गूँज गया
चींटी चिल्लाई
किसी ने ना सुना

हाथी ने फूँका
आँधी आ गई
चींटी ने फूँका
पत्ती तक न हिली

हाथी रोया
नदी बह गई
चींटी रोई
बूँद तक न बही

हाथी छुपा
सबको दिखा
चींटी छुपी
किसी को ना दिखी

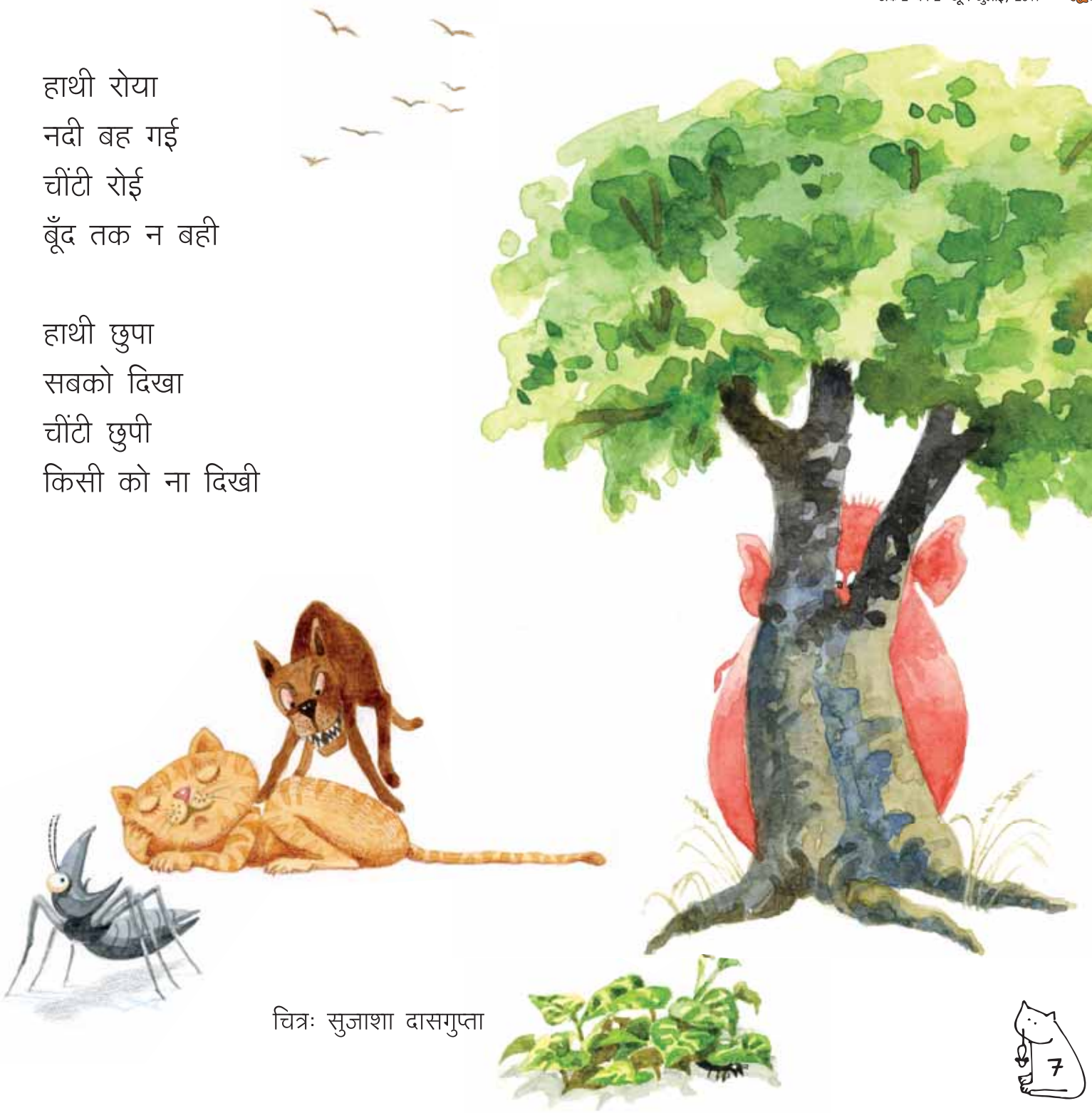

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

# मोबाइल

सुशील शुक्ल

एक हाथ मोबाइल पकड़े
एक से ब्रेक लगाए
हैलो हैलो कहते
रामलुभाए नीचे आए

जिस से जाके टकराए थे
उससे खाए चाँटे
धूल झाड़के आगे बढ़ गए
फोन नहीं काटे

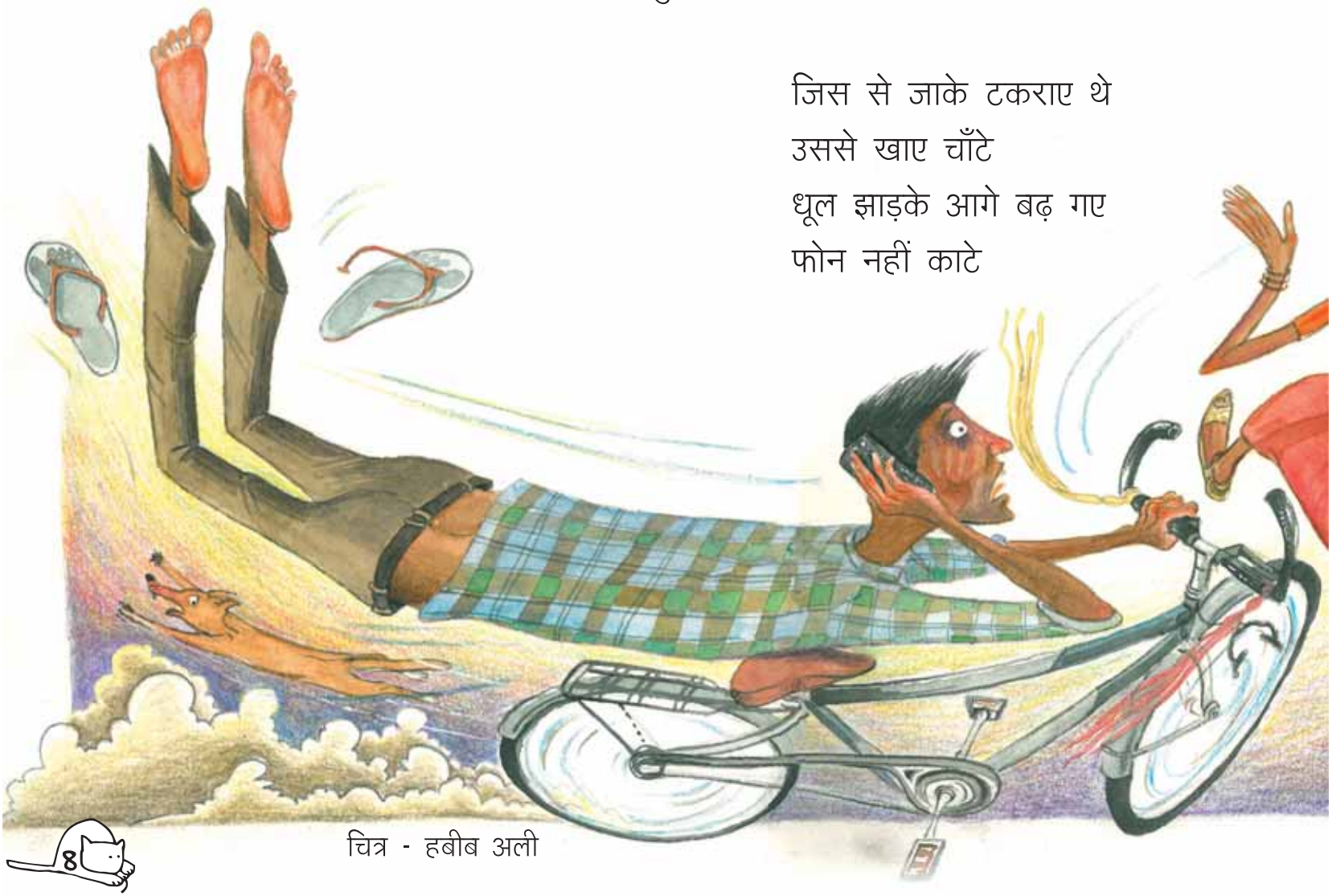

चित्र - हबीब अली

# दो संतरे

मंजरी शुक्ला

दो संतरे थे। एक दिन वे घूमने निकले। दोनों हँसते, लुढ़कते, फुदकते चले जा रहे थे। अचानक एक भालू सामने आ गया।

संतरों को देख उसके मुँह में पानी आ गया। उसने एक संतरा उठाया। संतरे को ज़ोर-से पकड़कर वह खाने ही वाला था

चित्र - हबीब अली

कि संतरे का रस उसकी आँखों में चला गया। आँखों में जलन होने लगी। उसने झट-से संतरे को एक तरफ फेंक दिया। और आँखें बन्द किए वहीं बैठ गया।

दोनों संतरे इस बात पर खूब हँसे। इतना हँसे, इतना हँसे कि उनकी आँखों से भी पानी आने लगा।

थोड़ी देर बाद भालू चुपचाप वहाँ से खिसक गया।

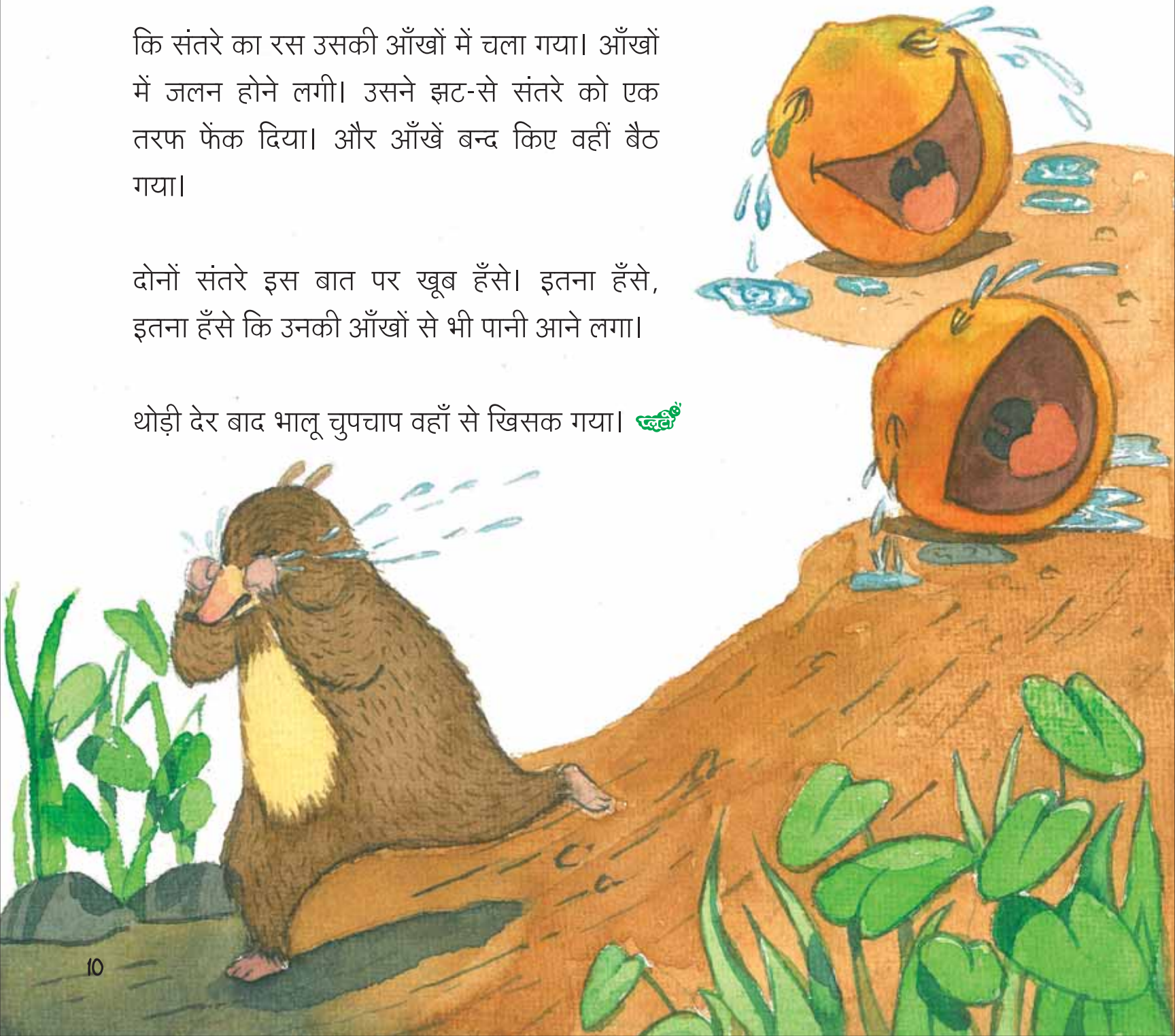

# आईने

एक कॉपी और पेंसिल ले लो और आईने के सामने खड़े हो जाओ। तुम्हें आईने में देखकर अपना नाम लिखना है। यानी आईने में दिख रही कॉपी को देख सकते हो तुम्हारे सामने रखी कॉपी को नहीं।

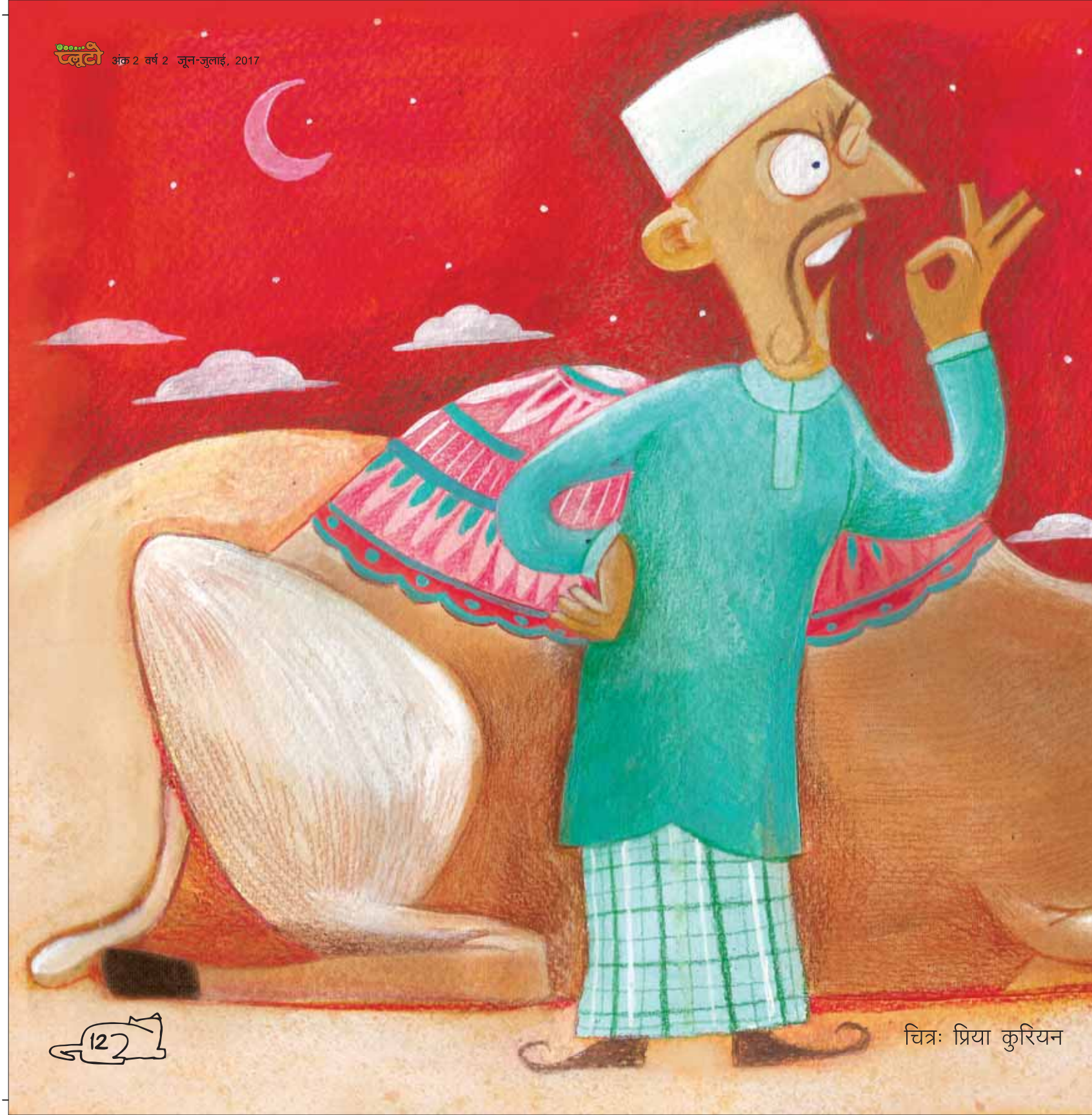

चित्रः प्रिया कुरियन

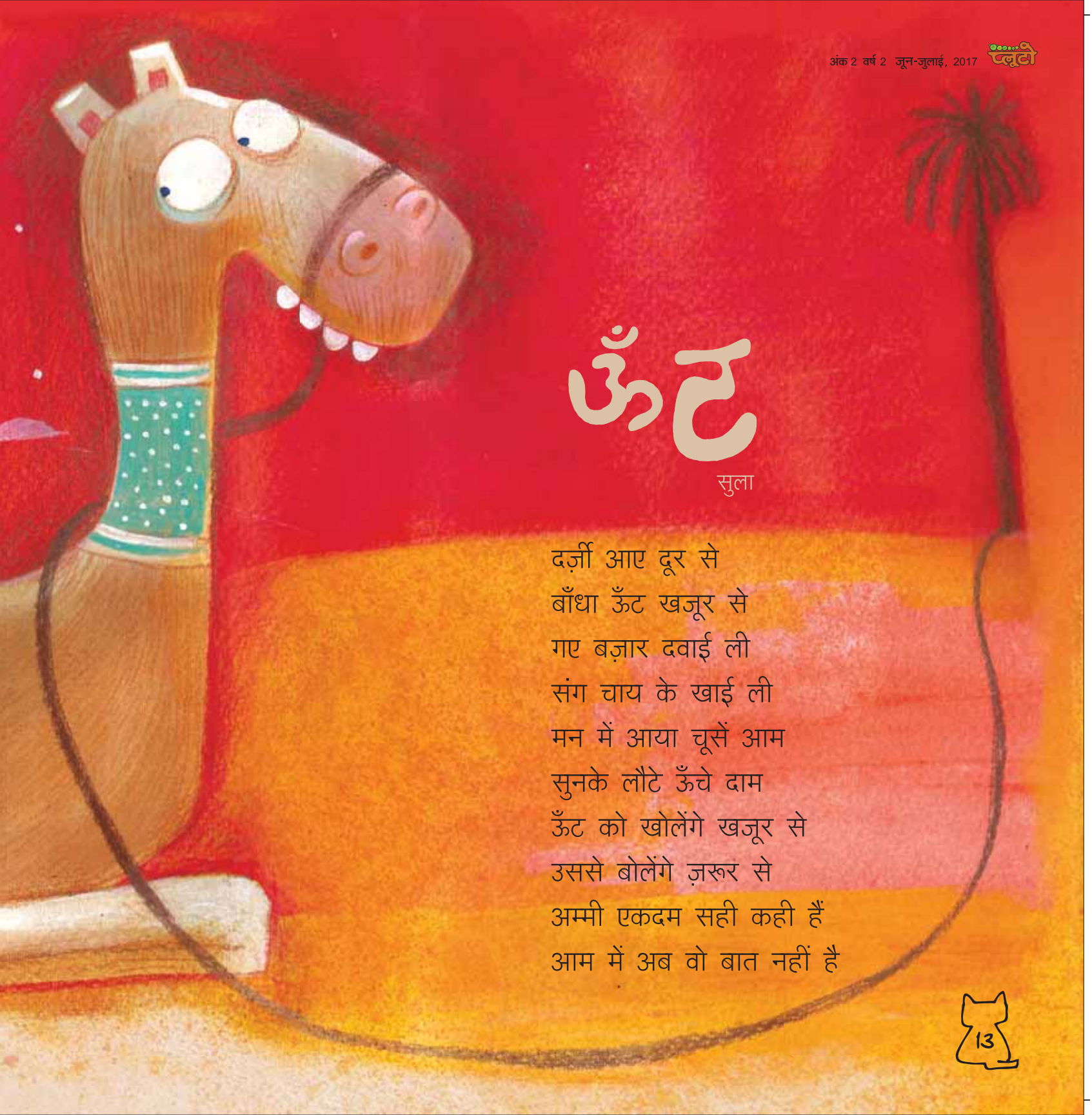

# ऊँट

सुला

दर्ज़ी आए दूर से
बाँधा ऊँट खजूर से
गए बज़ार दवाई ली
संग चाय के खाई ली
मन में आया चूसें आम
सुनके लौटे ऊँचे दाम
ऊँट को खोलेंगे खजूर से
उससे बोलेंगे ज़रूर से
अम्मी एकदम सही कही हैं
आम में अब वो बात नहीं है

# भूका हाथी

रिदम भगौरिया
पहली, शिव नाडर स्कूल, फरीदाबाद

तुम्हारा पन्ना

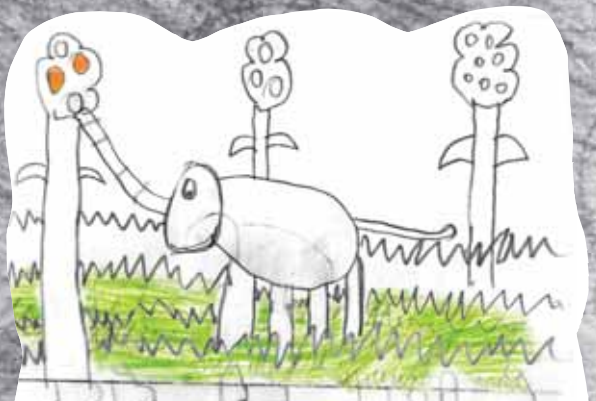

दूसरे दिन हाथी ने
सेतरा खाया तब भी
वो भूका था

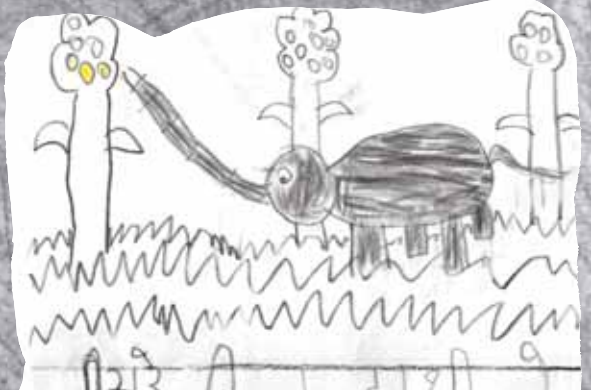

तीसरे दिन हाथी ने
केले खाया तब भी वो
बहूत भका था

एक दिन उसने नदी से
पानी पिया फिर वो बिलकुल
भी भुका नही था।

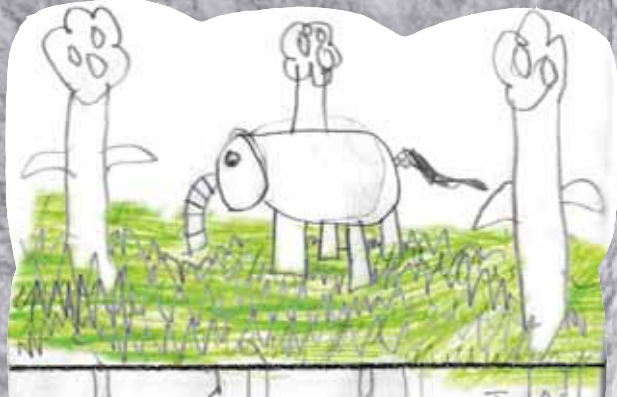

तो हम पता चला
की वो भूका नही
था वो प्यासा था।

# बिल्लियाँ

वरुण ग्रोवर

इधर उधर हम फुदके हैं
आँखें बटन के गुटके हैं
शेर से बिलकुल कम ना हैं बस
साइज़ में थोड़े छुटके हैं।

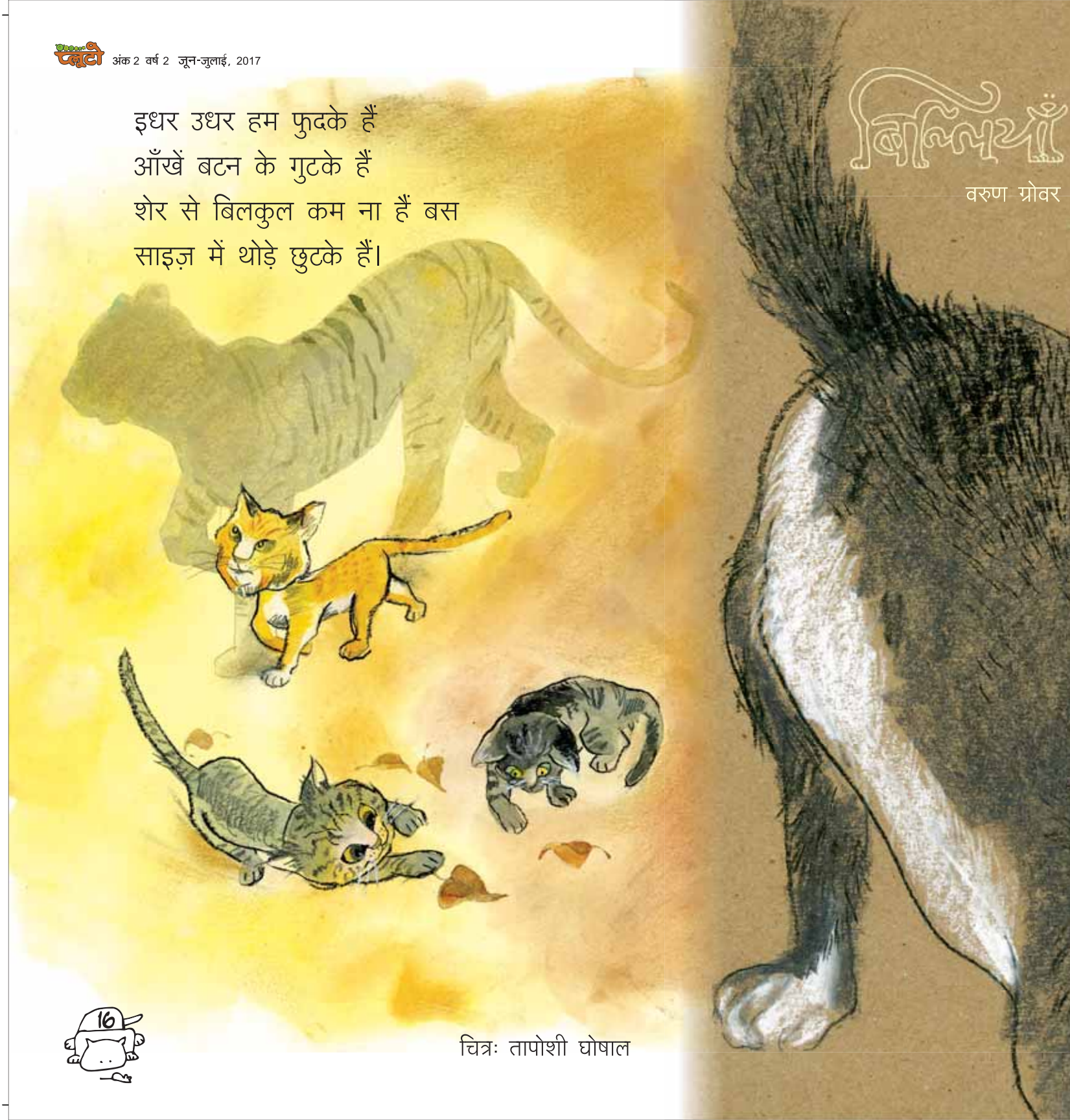

चित्रः तापोशी घोषाल

लहराती इठलाती पूँछ
उठती गिरती जाती पूँछ
देख के ऐसे चौंक-सी जाए
अपनी ही बलखाती पूँछ

जैसे कोई और ही बिल्ली
इसकी पकड़ हिलाती पूँछ। प्लूटो

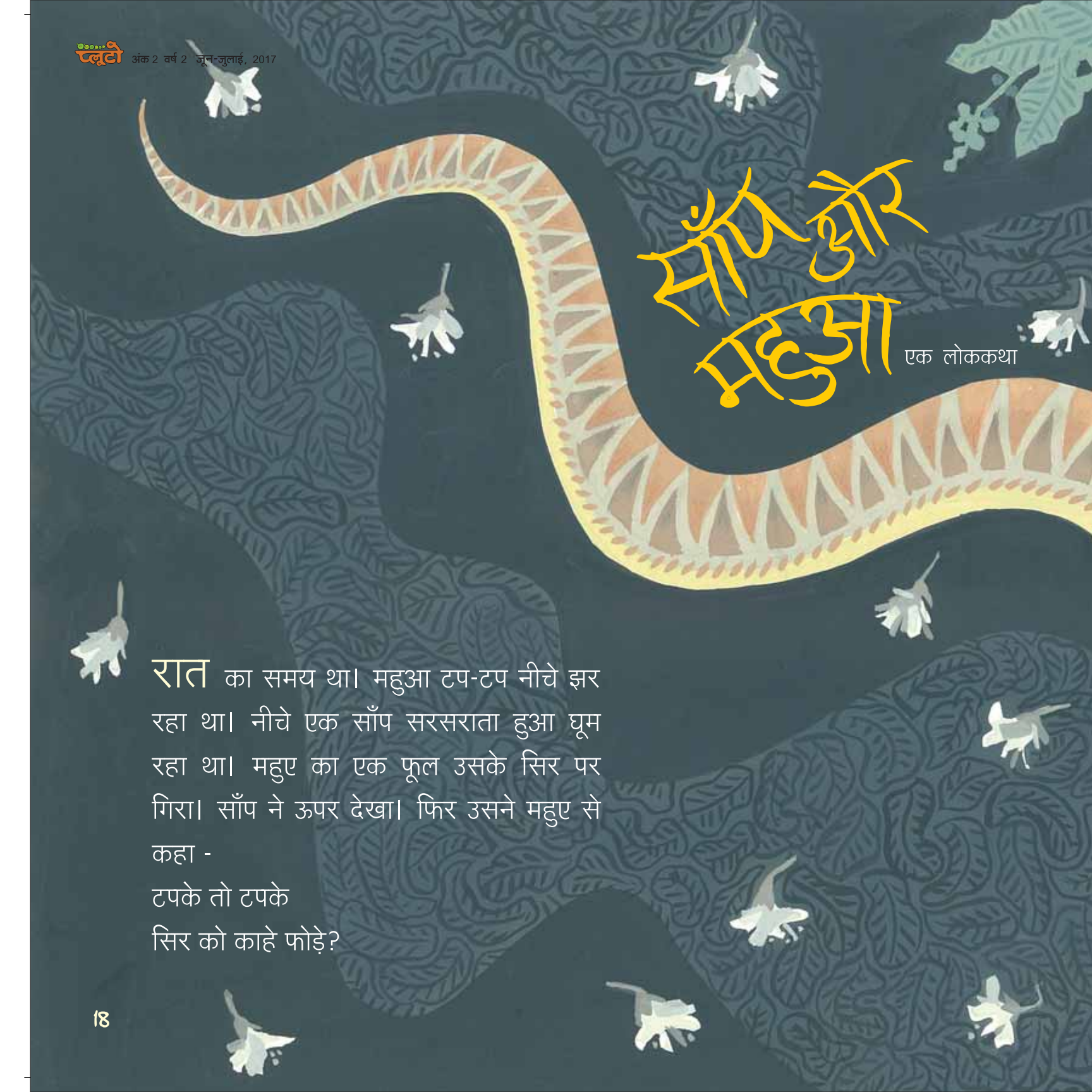

# साँप और महुआ

एक लोककथा

रात का समय था। महुआ टप-टप नीचे झर रहा था। नीचे एक साँप सरसराता हुआ घूम रहा था। महुए का एक फूल उसके सिर पर गिरा। साँप ने ऊपर देखा। फिर उसने महुए से कहा -

टपके तो टपके
सिर को काहे फोड़े?

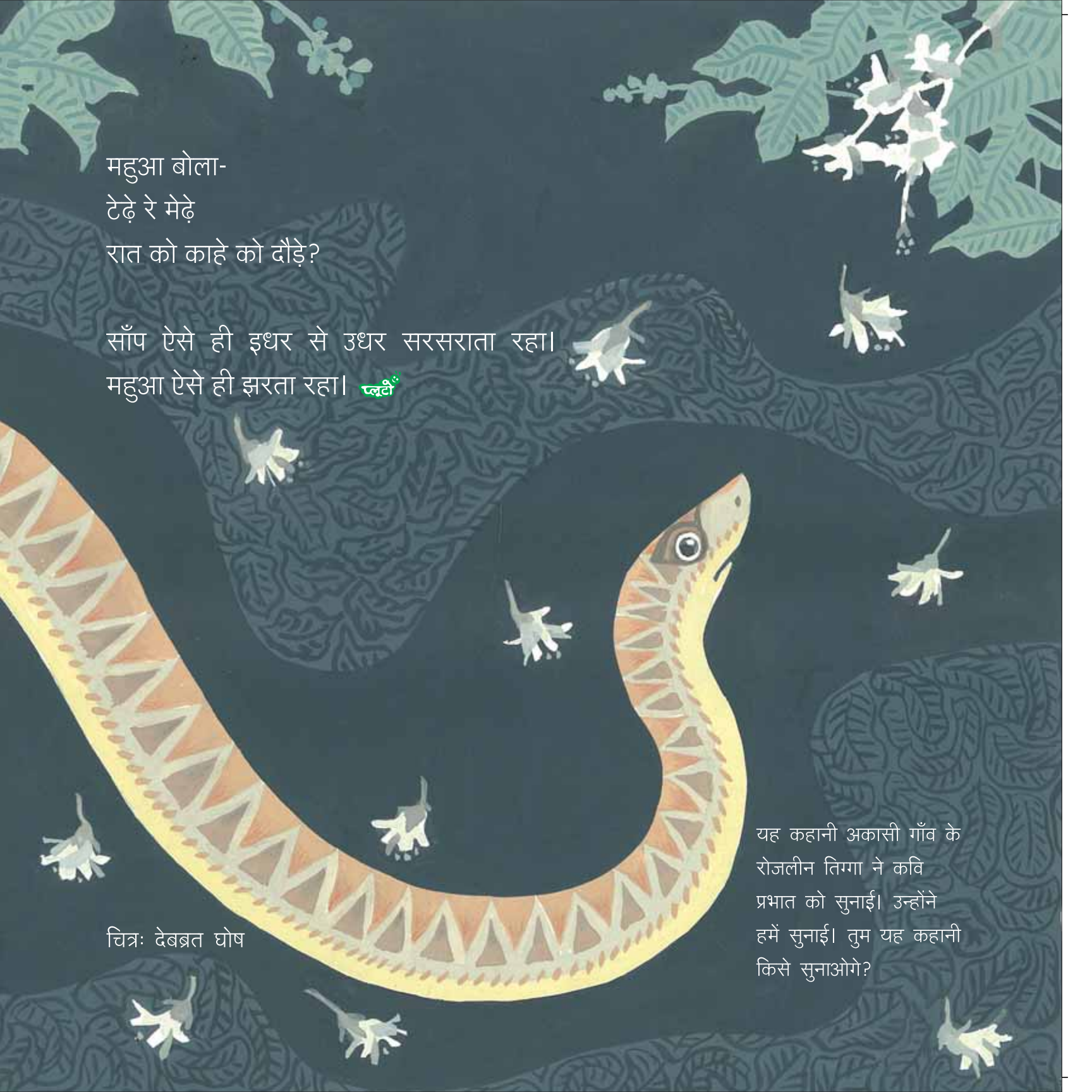

महुआ बोला-
टेढ़े रे मेढ़े
रात को काहे को दौड़े?

साँप ऐसे ही इधर से उधर सरसराता रहा।
महुआ ऐसे ही झरता रहा। प्लूटो

चित्रः देबब्रत घोष

यह कहानी अकासी गाँव के रोजलीन तिग्गा ने कवि प्रभात को सुनाई। उन्होंने हमें सुनाई। तुम यह कहानी किसे सुनाओगे?

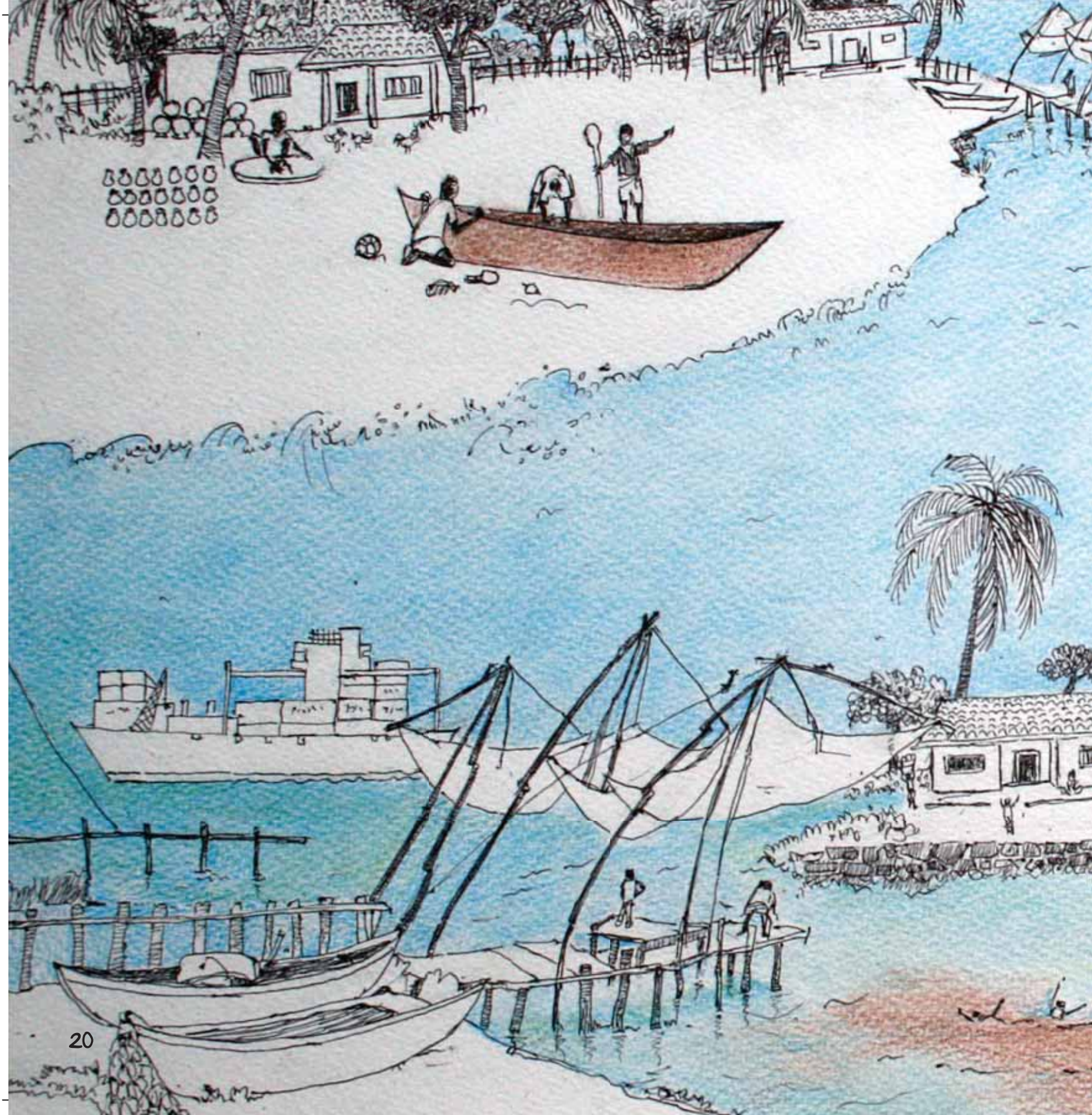

# मिट्टी की नाव

कोचीन के तीन कुम्हार
खेल खेलते तीन हज़ार
नाव बनाकर मिट्टी की
जाते सात समन्दर पार
नाव घुल गई पानी में
अब क्या बचा कहानी में! प्लूटो

चित्र - वृषाली जोशी

# गप्प सुनो भाई गप्प



नाव में नदिया डूबी जाए

चींटी चढ़ी पहाड़ पर
लेकर नौ मन तेल
हाथ से बाँधे हाथी घोड़े
दुम से बाँधी रेल

चित्रः समरेश चैटर्जी

# फॉर्म IV


| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशक का स्थान | तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी, नई दिल्ली |
| 2. | प्रकाशन की नियत अवधि | द्विमासिक |
| 3. | मुद्रक का नाम | संजीव कुमार |
| | राष्ट्रीयता | भारतीय |
| | पता | सी–484, तीसरी मंजिल, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 |
| 4. | प्रकाशक का नाम | संजीव कुमार |
| | राष्ट्रीयता | भारतीय |
| | पता | सी–484, तीसरी मंजिल, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 |
| 5. | सम्पादक का नाम | रीमा सिंह |
| | राष्ट्रीयता | भारतीय |
| | पता | बी/14, विवेकानन्द पार्क, पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना 800013 |

6. उन व्यक्तियों के–जो समाचार पत्र/पत्रिका के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के जो कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं– नाम और पते

| | |
|---|---|
| स्वामी | तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी |
| पता | सी–404, बेसमेंट, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 |

मैं संजीव कुमार घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सही हैं।

संजीव कुमार

तारीख : 1 जून, 2017

प्रकाशक के हस्ताक्षर


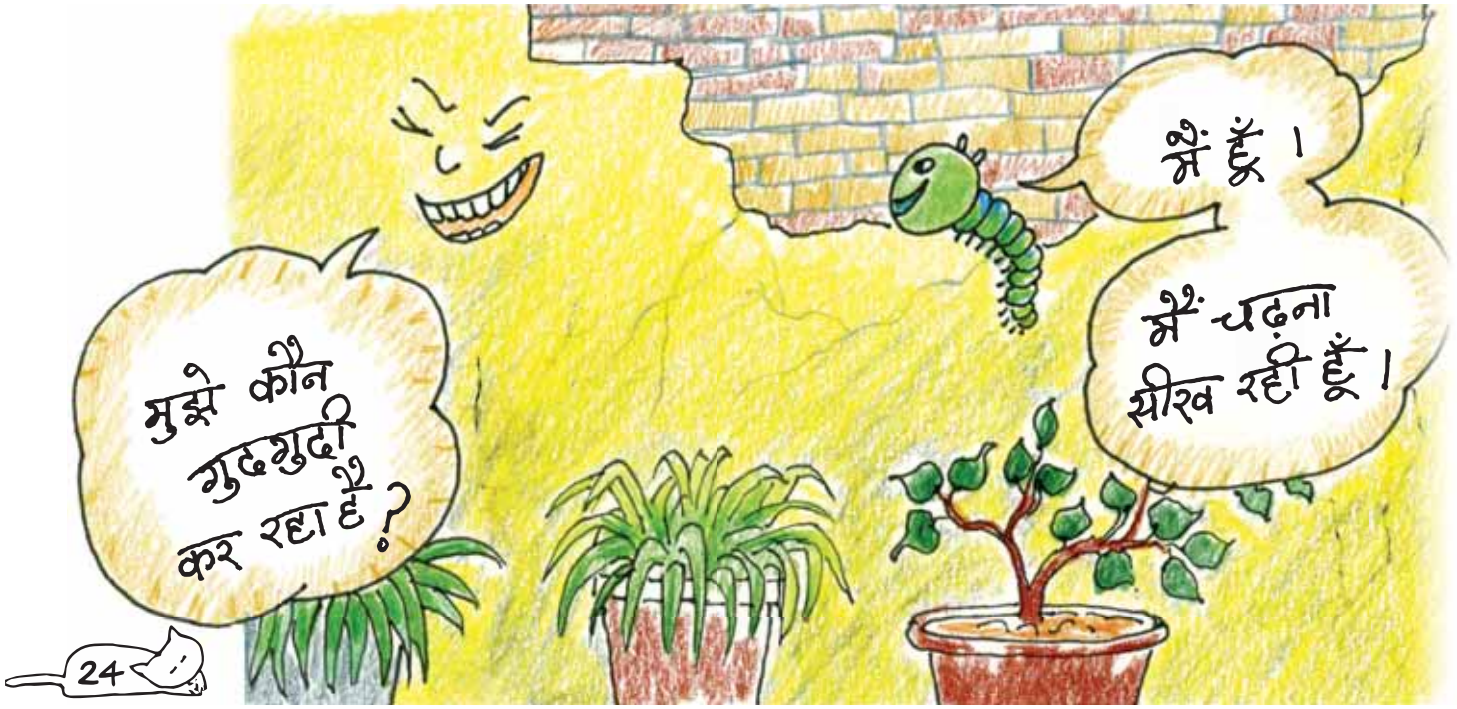

# कितनी गुठलियाँ...

श्वेता नम्बियार

एक जंगल में था एक आम का पेड़
आम के पेड़ पे झूल रहे थे दो छोटे बन्दर
बन्दरों से खेल रहे थे तीन मोटे मेंढक
मेंढकों पर आँख गड़ाए थे चार नीले साँप

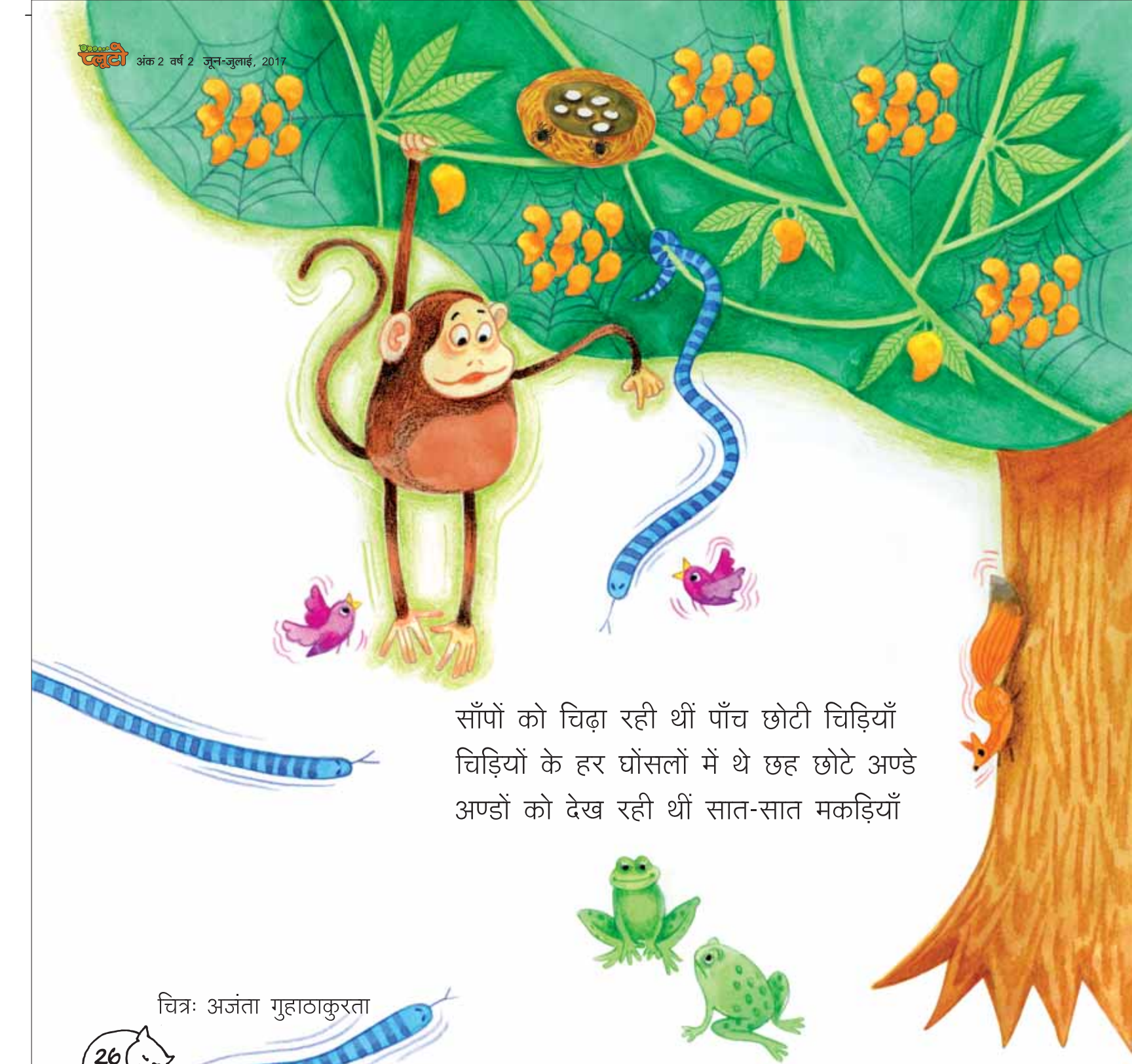

साँपों को चिढ़ा रही थीं पाँच छोटी चिड़ियाँ
चिड़ियों के हर घोंसलों में थे छह छोटे अण्डे
अण्डों को देख रही थीं सात-सात मकड़ियाँ

चित्रः अजंता गुहाठाकुरता

हर मकड़ी के थे आठ-आठ जाल
हर जाल में फँसे थे नौ मीठे आम
दस गिलहरियों ने खाया एक-एक आम
ज़मीन पर गिरीं बस नौ छोटी गुठलियाँ
सोचो सोचो
किसने गटक ली वो दसवीं छोटी गुठली!

# टिप्पू और मैं

चित्र व कहानीः प्रोइती रॉय

वो सर्दियों की
एक रात थी...

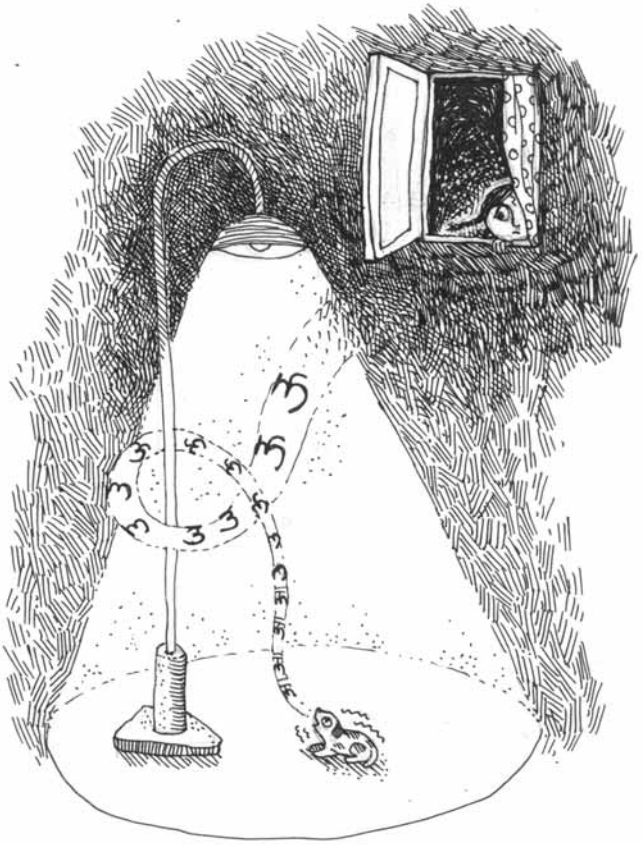

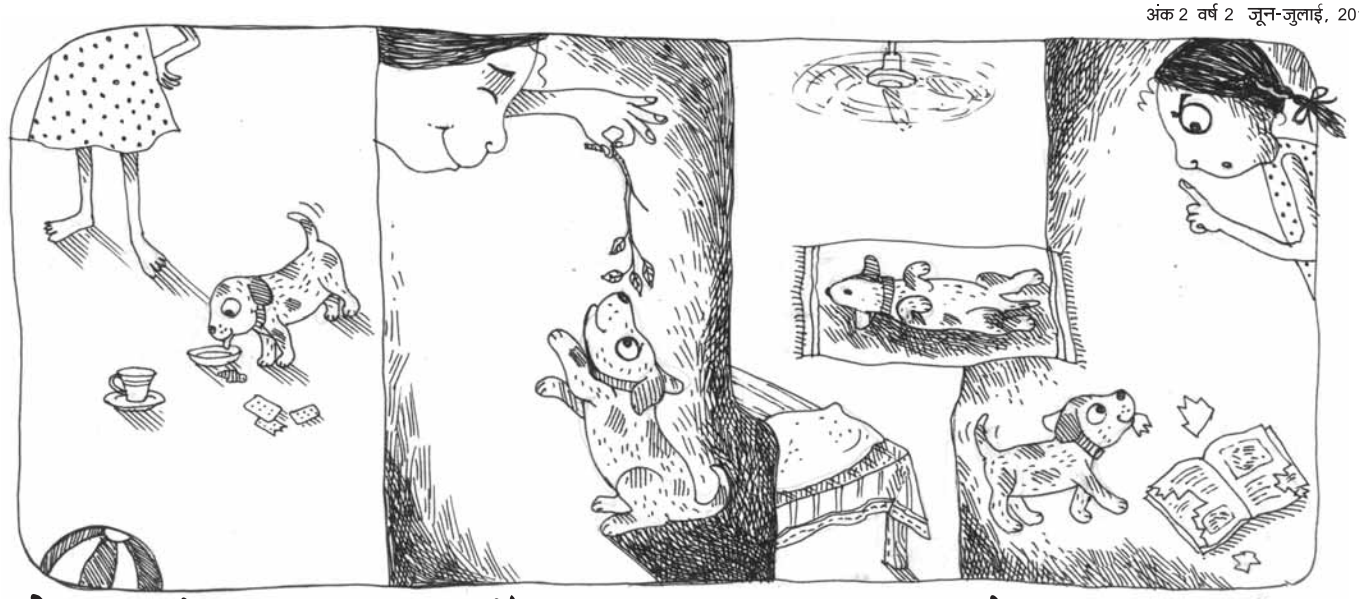

उसे चाय के साथ बिस्कुट खाना बहुत पसन्द था

और मेरे साथ खेलना पंखे के नीचे सोना

और किताब पढ़ना

उसे मेरा बाहर जाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था।

हम जब साथ होते तो बहुत खुश रहते

दो मेंढक कूदे ताल में
इक पहुँचा पाताल में
दूजा अस्पताल में

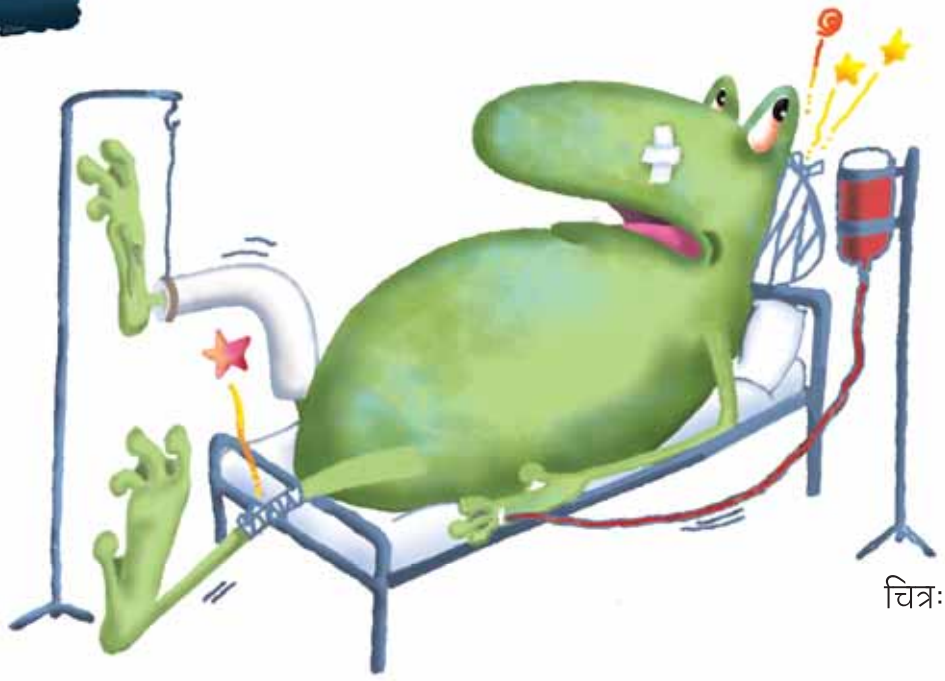

चित्रः अतनु राय

प्लूटो

**सम्पादनः** सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

**डिज़ाइन एवं चित्रः** तापोशी घोषाल

**आवरण चित्रः** तापोशी घोषाल

**मुद्रक तथा प्रकाशक** संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः रीमा सिंह**

**प्लूटो का पताः**
नॉलेज सेण्टर
सी-404, बेसमेण्ट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024
फोनः 011- 41555 418/428
ई-मेलः pluto@takshila.net

प्रभात

फोटोः संजय दत्त

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

एक गुलाब के फूल में
दो चींटी बैठी थीं
वे दोनों चींटी रिश्ते में
माँ और बेटी थीं

प्रभात

चित्रः सुनीता